❋ 7 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] भाई-भाई की दृष्टि को पक्का करने का पुरूषार्थ करो। बुद्धि से एक बाप के सिवाए और सब कुछ भूल जाये। कोई भी देहधारी सम्बन्ध याद न आये तब कर्मातीत बनेंगे।

2] यह तो बच्चे समझ गये, छोटे-बड़े सब जीव की आत्मा जरूर हैं। आत्मा जीव में प्रवेश करती है। आत्मा और जीव में फर्क तो है ना।

3] बाप आते ही हैं पुरूषोत्तम संगमयुग पर। तो इससे सिद्ध होता है कनिष्ट से पुरूषोत्तम बनाते हैं। यह दुनिया ही कनिष्ट तमोप्रधान है, इसको रौरव नर्क कहा जाता है। अब हमको वापिस जाना है, इसलिए अपने को आत्मा समझो। बाप आये हैं लेने लिए।

4] गाते भी हैं पतित-पावन है, सर्वशक्तिमान् है, उसे ही श्री-श्री कहा जाता है। और श्री कहा जाता है देवताओं को। उनको शोभता है। उन्हों की आत्मा और शरीर दोनों पवित्र है।

5] अनेक प्रकार के भक्त हैं। और फिर पहले से ही सुना है– भगाते थे। कृष्ण के लिये भी कहते हैं ना– भगाया। फिर ऐसे कृष्ण को प्यार क्यों करते हैं? पूजते क्यों है? तो बाप बैठ समझाते हैं, कृष्ण तो फर्स्ट प्रिन्स है। वह तो कितना बुद्धिवान होगा। सारे विश्व का मालिक क्या कम बुद्धिवान होगा !

❋ योग-

1] सुबह को बच्चों को बैठ ड्रिल कराते हैं। वास्तव में इसको ड्रिल भी नहीं कहा जाए। बाप सिर्फ कहते हैं– बच्चे, अपके को आत्मा समझ मुझे याद करो। कितना सहज है। तुम आत्मा हो ना। कहाँ से आये हो? परमधाम से। ऐसे और कोई भी पूछेंगे नहीं। पारलौकिक बाप ही बच्चों से पूछते हैं– बच्चों, परमधाम से आये हो ना, इस शरीर में पार्ट बजाने।

2] सभी जीव आत्मायें पार्ट बजाते-बजाते पतित बनी हैं। यह भी बाप ने समझाया है। तुम सुख जास्ती पाते हो। 3/4 है सुख, बाकी 1/4 है दु:ख। इसमें भी जब तमोप्रधान हो जाते हैं तब दु:ख जास्ती होता है। आधा-आधा हो तो मजा ही कैसे हो। मजा तब है जबकि स्वर्ग में दु:ख का नाम-निशान नहीं रहता, तब तो स्वर्ग को सब याद करते हैं।

❋ धारणा-

1] यह देह भी विनाशी है, इससे भी ममत्व निकल जाए। पुराने सम्बन्ध में ममत्व नहीं रखना है। अब तो नये सम्बन्ध में जाना है। पुराना आसुरी सम्बन्ध स्त्री-पुरूष का कितना छी-छी है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। अब वापिस जाना है। आत्मा-आत्मा समझते रहेंगे तो फिर शरीर का भान नहीं रहेगा। स्त्री-पुरूष की कशिक निकल जायेगी।

2] अब बाप कहते हैं, तुम एक जन्म पवित्र बनो तो 21 जन्म तुम पावन बन जायेंगे। क्यों नहीं बनेंगे। परन्तु माया ऐसी है, भाई-बहन की भी दाल नहीं गलती, कच्चे रह जाते हैं। दाल गले तब, जब अपने को आत्मा समझ भाई-भाई समझो। देह का भान निकल जाए।

3] एक बाप के सिवाए कुछ भी याद न आये। पिछाड़ी में तो शरीर भी ऐसे बाप की याद में छूटे– यह प्रैक्टिस पक्की करनी है।

❋ सेवा-

1] जैसे बाप ने आप सबको आपेही दिया है ऐसे आप भी मास्टर दाता बन देते चलो, मांगो नहीं। अपने राज्य अधिकारी वा पूज्य स्वरूप की स्मृति में रहो। आज तक आपके जड़ चित्रों से जाकर मांगनी करते हैं, कहते हैं हमको बचाओ। तो आप बचाने वाले हो, बचाओ-बचाओ कहने वाले नहीं। परन्तु दाता बनने के लिए याद से, सेवा से, शुभ भावना, शुभ कामना से सर्व खजानों में सम्पन्न बनो।